



॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥

विष्णुः स्वयं वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते ।
 विष्णुः स्वयं वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते ।
 विष्णुः स्वयं वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते ।
 विष्णुः स्वयं वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते ।
 विष्णुः स्वयं वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते । इति वा उच्यते ।

विष्णु

सुमङ्कयविषयविपूजा श्रवणद्वयविशालथीसफयविपूनिगारुव
जवाधिर्मननल्लरक्षाकुतुर्ज ॥ ध्रु ॥ ॐ ॥ १ नागरोचवि ॥ निभी
नाविचउषधीऊलसनाबद्धमध्यागतकादिष्टननादनूपीश्ममी
वृषलिङ्गललिगाधनगभामिनिलनिलसहगापञ्जनीनूपी ॥ ध्रु ॥
ॐ नमामिदेवीशीवजविना सिङ्ग उरायहनधंऊसमक्षानदबीश्

डादियानवर्द्धगिग्निकामन्यवशीहृगःविशुद्धमधुसूनि
 यन्नि॥ ॥ वसुधैवकुलम् ॥ ॥ वसुधैवकुलम् ॥ ॥ वसुधैवकुलम् ॥ ॥
 संरागवर्कं त्रेधा विभक्तं दलकमलमहासूत्र चर्कद्रुक्
 सनशीहृग्नकनाथ॥ ॥ दहयिजिनविद्यादिनि
 नयारुदिनी सवत्यमन्यवशीहृग्नकनाथ॥ ॥ दहयिजिनविद्यादिनि

॥ ५ ॥

विज्रिया ॥ ॥ दुःखदवीवमिलयप्रिष्ठ वनवीजात्रं वि
जंमनायकसमयाज्ञानद्य ॥ ॥ विज्रविज्रसूत्रं सह
ज्ञानदुर्कं कनकमनाकृजं हृदयाज्ञानद्य ॥ ॥ यंज
वर्द्धयश्चक्रेण मनूयुत्रंदवाजसूत्रनलयमृदिनहृद
या ॥ ॥ उंजाहृदौखं सधनकनिहृदमनूद्यनु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सयवन्नन कादिगल सयमावृत्तगियसंहावा ॥ ६
१ वागललिक ॥ अनुरुजतधगावकावरीगाव जलनूपविवि
विशुक्लमं १ ३ ५ ७ ९ काववर्जमृगमूदक मृगशोधि ग ह्ना
नमृतया ॥ ६ ॥ च दामृगप्रहवा धिरुलदायकं सर्वजिनय
पिन सहजक मं १ ३ ५ ७ ९ मल ६ ८ १० विरं मृग्यकवधमृव

समाननाहन विवकनूप ॥ वज्रयजमानमृव गधविसय
क हाव स ह्ना धिरं यवपियु १ ३ ५ ७ ९ कावमकपृथयगावकं व
जस ह्ना पिन विपाक कलहं ॥ ॥ घटमृगय सफ नूप
राव मृगमृगमया किनिज वनूप १ ३ ५ ७ ९ मल गिराध १ ३ ५ ७ ९ दवनाचव
हान सवमानिय ह्ना विव किलहं ॥ पाशदि मृगमृव

रक्तव
ॐ
३

दानपूर्वपुनर्मर्त्य मया च कं यव द्विगं विमदकल्लर्धं मदाया
ह्युद विरयय विविह नृप समयसुखहानव कुत्र कित्त
ॐ ॥ **बाग नाठ** ॥ गाल जटि ॥ नक वरु नि निशायन
दलि ॥ मृष्टागदही उऊपह नहा किन ॥ ६ ॥ ॐ ॥

उक्तद विवात्र निमहा माम कीदवी १ जगत्प मादि २ म
यनसूत्रा ॥ ॐ ॥ आगमवदनपू नानवधान २ आग धन
मदिन गुनूडपद ॥ ॐ ॥ पंचवद्वस्य नृप य उक्त
सया लजा गनि मा म्प हनूव उह नूव ॥ ॐ ॥ जगत्प

१५४
३१

नृचत्रधिप्रगमधप्रियाश्चनयित्रीवाकुवज्रसूना
सूत्रपि॥ ३॥ ॐ॥ **॥ वागहन्त्री ॥** नमः ४ हं मूका
मूलरूपधनृश्चक्रविसत्यउनाधनृ॥ ॥ गन
० हं हं नना हं हं नना गन हं हं हं ॥ ॥ इदमाशि

१५४
३१

गनयागधनृश्चक्रविसत्यउनाधनृ॥ ॥ धनवधु
सैखनदरुधनृश्चक्रविसत्यउनाधनृ॥ ॥
मायादहं विनजगुं १ स्वहियकनृगसत्यमहं ॥ ॥
॥ वागहन्त्री ॥ ॥ विचक्रविसत्यउनाधनृ॥

धिनित्वा न च मन्त्र निश्चया शं वज्र वाजाहि आलिंगनम
स्वत् नानाजसिमहा ह जा ॥ ॐ ॥ न नार्द्रं द्रं
न नार्द्रं द्रं ॥ ॐ ॥ निजवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
मन्त्रनिश्चयः यत्नमाज्जन च मन्त्रनिश्चया शं वि श्ववज्र

वृद्धवचननामकनटकाजी हाउआर वनम् साहि
ता ॥ ॐ ॥ वज्रयक्षु गजवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
विजमाज्जन च मन्त्र निश्चया शं कनिकया लयवर्धुवर्धु
साहि सवधानी या युव मन्त्र कलि वधिना ॥ ॥ दिग

विदिगकाकाभादिजमगाकिनिदवि. सजाआन
दममगिदवात्रेनमामिस्थीयकसंमवा. सनरुव
वजन. ज्ञानाधिना॥ ॐ॥ ॥**वागकनडि॥** दि
हंदावाययिजागिनि. ददकवादिद्रं कमजकमिद

कमविषात्र॥ ॐ ॥यागिनिगुक्कविष्. खनर
नजिवयिरतोवामद्ववित्र. कमजसयीवयि॥
ॐ ॥**कृपद्रयागिनि**. वयनजायद्रमनिक्रव
हियात्र. उदियाचमायि॥ ॥सासुखत्रयाका

三

२११६८

ना॥ ॥ नान्वनमा मिष्टी स्ववविना वं कठया गिनि
वनि वंसह सष्टं गता ॥ ॥ वज्रवा नाहि जालिंग
हा कलु वं कवि वं वन समवविना ॥ ॥ रा कदह
नवि ममा सष्टु रकन वं कन वन नन गायन रिषक ॥

॥ द्वादशकुञ्जयामि. चावि वव्वदलन श्रनिम सहव
 गगधकुशलिना ॥ ॐ ॥ श्रगामवकन ॥ जयं वाक
 ॥ रुववद्यवयि त्रं सयवसूत्रासव. जगनउधवनि ॥
 ॥ नरगवनियादूकामनमहि. मधुल. महलवृषं

पनकावात्रे द्वादमहा उज्जरवनविशुविन. मयव
 धयउत्रावा. निनिनिनिनिनयनिनिनयना ॥

॥ कवनिययव. गिवजोदनवठिबमात्रे कवि
 खद्योत मकुकैगा ॥ १ ॥ ॥ गिनससिधव. कंडाव

॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे ॥

सूत्रगवताः सतिदासाः प्रशुवतादविप्रसाधे
येयासाः ॥ ॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे ॥
॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे ॥

अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवासे ॥

मन्त्रादिः सतिदासाः सतिदासाः सतिदासाः
सतिदासाः सतिदासाः सतिदासाः
सतिदासाः सतिदासाः सतिदासाः
सतिदासाः सतिदासाः सतिदासाः

बविद्यहं ना॥

॥ वक्ररुलिरुलमद्यनामनदर्थ
दसनसविना १ दशानिपीठि वधन, सद्यकि न धरय
रु ना॥

॥ विविधिवल आरु न धरु विन, दिथ नन
मा ली १ उ ग न वाकि न सर्व संपानि, सिद्धि वृं पु सादा के॥

२ वक्रगमना॥

१ गगनरुलवि॥ अड गमना न, जिल सवक्रा, यूलिन मद्या
वक्र कना गम वासुकि नागम, गकि न मद्या १ गगल मम
अध्व क वक्रा॥ ॥ १ उ ग म जल उ क्र रु न वाकि वा
य वाक स, दिगं विदिगं वलि द वधि न १ अ सु म म म

कृषिं विप्रश्च न नावयि सरुजा नद ॥ ॥ कं क
निद्या ना वलि गमया क्रा नो कला कं क्रा न कना ग न क
नं करे न वा वलि क मया स न स जना ग न न ट क्रा ॥
॥ अ इ इ हा सा षं ष या ह ना ग म य व टु म द्या व

रि क म हि न द ह द ल मी वा ना क जं ग ट क्रा द र्शि न म
या म द्या य आ ॥ ॥ द्या न म म ना य क्रा टि व
क्रा पु न म ना ग म य व न म द्या श कि लिं कि लिं वा वा
अ ई न ट क्रा क लि क ना ग म व व न म द्या ॥ ॥

१८ श्रवनि निरु वास आन

मालविष्णुश्चिन्तितः सफुराय रुवक्षः॥ ॥ विविदि
गद्येन भोलि जह गद्ये ला प्रकाश न विवादी न वल
दत्ताय कं॥ ५॥ ॥ १२॥ जागरवल्क माल
इव निनिदिन वामजानूख म कि नक्ष माल

गोसा १ जागद्धवसा दवंदि अवसा गिनुवनन्या
या प्रचलविना ॥ ॥ नमामिस्त्री वधुमहा
आवठम, इगुम्हकुहयकादिना प्रविश्व नाथविश्व
यिन, त्रिगविजममहाकाथनाया ॥ ॥ श्रीगिरि

षनागाः उच्यन्ते यथाऽहं कर्मात्तद्विदुर्निमित्तं यथाऽ
पिष्टिर्न पुरजः कर्कलनयधः वलीसंतासा जायते
जना ॥ ॥ माधुजमाया यत्र जत्र जत्रा मोदयि
सा यायाय वरलना २ समय समाया नगरिमाहाः

हानमायासमाहिदेहा ॥ ॥ जलारजधायकः
निनमोली कयलनयत्र ननं फनं काला २ सवनजना
था वंदिनयवधः जायसुमधलप्रवजविला ॥ ॥
रवागरेलीव ॥ गऊजिन उच्यं लथधलियाक मय कलि

सः अग वालि ३७ म नू क ल गि क नाला गि नु ला वाम
षट्ठांग कया बधे वा ॥ ३ ॥ श्री संभव वाया वाह लि
गु क्त ऊ गु ना न मा न वि वा य यिया न माया सा शु र
व नु मू डा सि धे वा ॥ ॥ या भ व क्त मू गु वाम द्वा थ

धनिया उ न ल सिल मा ला न नी ल मी न मा हि न क न का
र व व व मू ख अ न वि न्ना ल धे ला ॥ ॥ अर्ति इ य
जा र यिल व वा द यिया न कालि वा णि वि ष मू डा न
वि ष क लि सः अ व व ड उ मा इ क या ध्र व मी ख र मू डा ॥

ब्रह्मालविचरदिया त्रंजकिनिदियनि च वसिक
वाजनिद्या तवेनात्रसंशासनी ॥ ॥ सिंधिनिद्या
विनिजवकउत्राकिनि स्वर्दाशयजभूत्रक भद रुक्म
त्रंजजकिनि धात्रवनालजकिनि चत्रात्रजकिनि

चक्रुजदवि ॥ ॥ दिनजननी दवीदाकिनि शरा
यायि सजन पंचमदारुलन विदु विगात्रं वतं मरु
नक वजय नु ० स्वर्दाश यायवजमध्व ग्रीहानदवि

५७
अष्टादश

१ गगन उषि चक्रि कुल कठिना चकमं स्वसह विग
 गी वं नूदन वसिल माला शसिल चक्रि चक्रि ययि या रुद्ध
 विर विग गगन कना दिव ध्रुवि नाया ॥ ५ ॥ प उ म यी रु
 नूव द मा नू को नाया रुग ना ध यी स च नाया ॥ ६ ॥ व ऊ

कयाटकहाथधियाकथक्रियाडखदीगशंसंरुगना
गिनिकमलविहासीमहासखमचिनपसाद॥ ॥ वज
वावाहग्राहिंगनसमघननाचयिवकविहचरंगशवाकवि
क्रामयियाकिदक्रिहचरवमूधउवनरुलपसाद॥ ॥

२२
२३
२४
२५
२६

सहस्रसंष्टिलिययागावन्निकर्षपात्रीरुं नूवचयधपसा
दशपक्षाआलिगनकिदन्निरुं नूवविवाहायिधुचकनूध ॥ २३
हमायनसा ॥ मायाजा लविम्य बादसम मिनाइमाहमा
नवयि सादिल माया मोहा ॥ ॥ ३ संसा नइ गरा
२ वागदवमाह बादि च आसा ॥ ॥ ३ नमिरननेय

हान्मादमहावलिष्टजा॥

॥समयाचक्रवृथा॥

दवाश्वाकालिचडमदनयमा॥

॥सिमवयकनंक

केशावलिष्टमलाप्रयस्त्रिकेनकसमाकलनयन॥

मादमहावलिष्टवनगयनश्मयसासमर्कवृथिव

अलागे॥

॥ ६६६ ॥

वासादहिन २५

एवागमीश ॥ वासादहिन उदयिद्यनहीश्माग्राविनासपिमहासुख

द्रवयिया॥

॥ उजयिल जायिया सरुज ग्रानेदश्मयचविनास

यवयविशवव॥

॥ गयनमयनविरुविनायियाश्कायवाक

विरुनकलीया॥

॥ उयकधवयिआरुललयियाश्भावाय

ययान (गधधवादी॥

॥ पीवयिचवगुनूपायपसाइश्नयि

या. समज सदजि मानको ला १ रु मविनाहि न वऊ वादि
रुउ मदि न मान सादा ॥ ॥ क्षान्ति होय न व न सरु
मयन कय न रुव पि न वा जा १ गगन गि जा वं धू वीदि न जा
दा. मजु म धु त रु निना ॥ ॥ शिर्ये व द्या न व रुदि

हान संमल पायि सयि धु चरु नाना १ रु मविनाहि न वऊ
वा नादि रु म विरु ध मि अ धा ना ॥ ॥ गम वा नि नि ना व
ऊ ~~रु म~~ आनिय व न स न गु न व न ह आ ना थ १ स
मया आ न द रु नि ग्य ल म धु ल स म न व ऊ वा ना दि ॥ १५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पूज्यं कपूज्यं गणेशं तत्त्वतः प्रवर्तितावे ॥ ५३ ॥ सर्वस्व स्वा

हि स्वाहि वलिपुत्रले, यद्यद्याद्य विद्वन् शं पंचाष्टनस्य

पंचमालिः, पंचमालिः न सर्वनिना ॥ ॥ सर्वयक्रयाक्रस.रु

नयनोपेक्षमात्रापस्मावश्च कञ्चिकनिद्राय गृह्यसमञ्ज

न. ॐ मन्त्रलिङ्गकुरु॥ ॥ दानपत्रिसर्वकार्यकल्या. स
र्वसुखसंपत्तिसाधकस्य। धेवन। धेवन। अ३। धेवि वथं जि
द्यथमाहकमथ॥ ॥ समयनक्रुदुदानपत्रिले. स
र्वसिद्धिर्हंपद॥ मक्रिले१॥ आसंसायनगथागतवने. सर्वसिद्धि
र्हंपदवृद्धि॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १॥ नागसंनवि। नागसंनवि।

वस्तुवसंपत्तिस्तान्द्रश्याथेवमथेवउअथेपिवथजि

॥समयवक्रकुदानपनिलस

सिद्धिर्ह्यपदम्भक्तिः २२ आसंसात्रकथागुणवने सुखसिद्धि

पदवृद्धिः॥ ४२॥ ॐ ॥ १॥ गगनविनाशनाश

॥ १ वाग रुचि वि॥ ताप इह मा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमामि २ जिनेश्वरक लदक वदवमममि शालिगि ना
२ पंचज्ञानपंचधनुस्य नृपावृद्धधर्मश्रानयध्वना ॥ ॥
गनाहं हं गनाहं हं हं २ जगन्नीसा प्रदधालियामनोह्वन न
मास्तु २ पंचजिनेयध्वना २ पंचज्ञानपंचधनुस्य नृपा
वृद्धधर्म श्रानयध्वना ॥ धृ ॥ नमामि २ श्री धामनिपू

लेखनः प्राद्वि सिद्धि वचदायनिर्क २ इति गहवदा सर्वपाप
कर्मक वदानपूत्रा २ इति भीकृपदा ॥ धृ ॥ नमामि २ धर्म
धनु वागीध्वन ॥ धाउडाह वा जयविमलिना २ धाउडाह वा
वनमूनमूनका वा सर्वदेववसिष्ठिना ॥ धृ ॥ नमा
मि २ वागीध्वनमगुलपद्मगि विनिनवासिना २ सत्ववि

२५
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भाहिरु इष्टं विना हानं पदमामि तिन चक्रं ध्वना ॥ ६३
ॐ ॥ १ ॥ नमो निलवद ॥ अखय निल अश्न अखय अ नूपमग
गदो कमत्रक साधना शुभा ये विना सिन नायकी विद्या दवा
बाध विवृ सप्त अति ना ॥ ६४ ॥ नमामि निलानं रू नील
कृत्र ध्वराव ॥ हं उरु न धर्म पापि ना ॥ सत्र दस च सप्त म

अ
अप्रकाशिता अत्र अत्र च सप्त व्यापिता ॥ ॥ ६५ ॥ अत्र अत्र
वच साधित्र चक्रवर्ति मंत्रमं तुल्य मयि नलिना २ निम
ल हृदया चक्र ध्व विनं रु निमि कृत्र ल अत्र मय साधना
॥ ६६ ॥ अत्र काल चक्र श्री चक्र सचन अनन्य काटि सि
धा पात्री गम २ श्री रुग डी दियान पूर्व गि निजा वध वि

ॐ श्रीगणेशाय नमः

पञ्चमहासखजानक ॥ धृ ॥ ॐ ॥ ॥ **नागकनठि** ॥
धीमश्रुनाथवच महविनविजयाश्च पुहासखर्धमवि
नागवासदस्क ॥ ॥ नमामि शधीमश्रुकुमा नाश्च
गदिध्वनीजगन्गुपु उवनव्यापिना ॥ ॥ प्रकधावि
गुरूपमगु न्नाया शधीधर्मधुल्लान नपाल मउ ल

विष्णु

संकिरि ॥ ॥ **नागविद्या** ॥
विष्णुसदपदिता नीलजन ॥ धृ ॥ ॐ ॥ ॥ **नागविद्या**
सा ॥ द्विभुज चकमूरवचक वचवदन शनर्गनमकृत कठि ॥
छिनिवाचना ॥ ॥ नमोदवी वृद्ध ठाकिनिविध्वजननि
शक्ति उवनव्यापिना जिनरानदायनि ॥ ॥ दहिनकन

वज्रविज्रासिगदग्न न श्वामकजाठक चतुमविष्टु पिवयि॥

॥ गत्रुलिमधुल्यमाप्य उदियालेगमना श्वत्ननोपत्र

वत्र, हातगपिवेधिता॥ ॥ श्रीविद्याध्वनीदवि, सत्रनत्रम

हि श्वक कृपादिसिद्धि, दहिभमागा॥ ध्र ॥ ~~ॐ~~

१ नागलजीगा उलगभरुनद श्रीविग, न नृसाहा २००

दुनील्यशक्तिपिठलक ६॥ ध्र ॥ जगनूकप्रकृपागुह्यद

वि॥ इष्टमासविद्युनाठानिदवि॥ ध्र ॥ त्रकनयनचिनित्र

पुल्येमासा श्वर्ग, कत्रकि, कपालनि लोत्पन॥ ध्र ॥ वा

युवमेव सत्ययातिगा श्वर्गबलकोदलभवाकना॥

॥ चमद्यसमनशी उ श गालनि मा गो १ रुनयि अ मा

जिनवद १५

द्ववडवलिना॥ ४३ ॥ **॥ ८८८८ ॥** जिनव
जगनय नउवन सीकापी नकनिवा म्भी जिनव नमूनिना
२ न पा ल म ७ ल मा म्भी प्रभी हुन की न (६) जग न ना थ नू ह
यदा ना॥ ४३ ॥ जिओ ग निग रिया न म्भी व गा न या न द व
पुष्प मा मि वृग म ला क ध्व न द व २ सिद्धा जी गिव न्धू द रूप

त्रिक मा ला या उवन य नि चू श म धि न ल न्ध द व ॥
वाणि क म ल त्रि का धि न वा भि या न वाम क म ल ध न हा थ २ यु म्
ग म ल स ना द का टि दा पि दु इ ह ख र य ह न धा ॥ ॥ हूं हूं
रुग व नि का या रुग व नि न म म्भी वृग म ला क ध्व न द व २ न मा मि २
मी न न न्ध द व स्व र मि ध्वा ना न द व ॥ ॥ दहा रु मी द्वा पि

शुक्रमष्टिगदहा २ रावरुयदहनविषाजविषा ॥ ६४ ॥
 सकत्रविष्महन्निमनिपनिर्गम २ वनिपनिस्वगनिवासु
 ५॥ ६५ ॥ रावा रावदहनपनिर्गम २ अनूपमसुख
 समगनसुखचिह्ना ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ रागनाठ ॥ कवनन
 लाकठवचकडा ननूपवृद्ध २ सुखयनिर्लजनसयाव

[illegible]

नमो भि २ जिन धर्म धाम ३ ६३

इति नि उवननाथ चक्र संवन नाया ॥ धर ॥ 
१ नाग नाट ॥ नमामि शजिन धर्म धा उखय सु २ जि उवन
अनूरु न धर्म धा उवागी ठव न ॥ धर ॥ नमामि शजिन यक
जिन नमा सु २ दक्ष मि का वि म ग महा सुख नाया ॥ धर
स्वर्ग मध्य पाता न उवन श्री का पी ग न २ चक्र उवन गानि

महा सु न नाया ॥ धर ॥ धर्म श्री मि उ झ न श्री मि उ २ न नाव
म उ न मा ज्ञा सु ना सु न पि ॥ धर ॥ वाम पूरु क ध न धी २ द
दिन रु रु स्वर्ग सि न ध ना ॥ श्री ला क ठ व न म सु ल महा सु
ख नाया २ नाजा भि नाज श्री न २ उ म सु द व ॥ श्री वजा
वार्य व ड न आ वार्य २ न न यि श्री वा क व ज च न च वि ना ॥ ६४

सध्वि ५५

१॥ वागवसक ॥ मध्विपुत्रिपत्रा इयनिकलावा २॥ कलसद
ववदिगपाद ॥ ॥ मेडी आदिबूद्ध श्रीमत्तकमावा २॥ खंड
मूविबदिग यमनृख्यहवत्र ॥ ॥ कंकमत्रविना सुनवि
लष्टषमान २३॥ आर्गहिन कबूधविहात्र ॥ ॥ विषम
विषमकलयात्रागमनस ३२॥ विहववियापिन श्रीगुनस्य

三三三三三

[illegible]

॥ कात्रमृद्दयिषा सं

॥ सुवभा

ॐ कृद्वी नीलकनकद्वी शसनपाण्डवसुचर्यराव ॥

ॐ ह्रीं सायदेवी कुरुष्व देवी २ मातृमार्गदेवी ॥ भाति

ॐ नमः ॥ ६० ॥ १ रागा नृगमत्रमात्मसि ॥ द्विगुण-

कमलखनकवत् अश्मकूटकमदिगम्यया ॥ ॥ नाना

ॐ नमो ह्रीं ह्रीं नमो नमो ह्रीं ह्रीं ॥ ॥ वामक नाटक दहि

न कच निहाउ म्मा रुच ध सु (अरिना ॥ ॥ सूर्य मधुसूत ॥

मास्य नादवमूत्रनिश्चक्रमश्रुनविहसिना॥ ॥६॥

॥ श्रीगुरुवे नमः ॥

४९ वृद्धाग्निनी

गुनूचन (६) सिन्यगम धन्रिया १ वज्र वा नाहि दुशपाय
सन्ध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ नाग शृंग न मास नि ॥ वज्र का नि नि रु
नूक नाया १ गुणुवन द रुम प्रा (६) ॥ ॥ पिब धि महान न
महासुख क न यिया १ वज्र द वीरु लिया नू नू न नान ॥
॥ उद्धमालि, विदल कमल स या (ग) १ दहि विना साप

वनसरुदयि॥ ॥ तु यिं जे न द व महासूख शर्प च सिन
स. वीज वा नू लो॥ ॥ भगवत नूप भाद-चतुर्थ तिषक २
सान ध्वनी सी सा प्रसमूडा॥ ॥ ११ बाग म्य उयी।
दी विनिधाय वध विनाश यिक यि स २ ड थ रु ना डा म थ ह क
यिसा॥ ॥ रुजं काय मन ऊगा न निवासिया २५॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अमिथ अमिथ निर्वजन वाया २ सहज सुन्दरीया जिनरु
लय यिस ॥ ॥ उचउडागिनी च सम सम यिया २ वज
वा वाहि आलिंगन वा वि ॥ ॥ उधरु वा ठा क नू ह क वां
दस्य २ क र्य क र्य आलिंगन नी ना व र्ण वा वि ॥ ॥ ॐ ३
नागवसन ॥ ॥ अगसि क सु म इ ति क ह प रा ख न २ वि वि धि न

तुम सिम कूट वि कु षि ना ॥ ॥ ना वे प्र थी अ व न वी ना २
न ना च उ आ न द वि ना स यि अ व ना ॥ ॥ यो म ड रा व वि
मू मू डा द क्ष ना २ प ह्ना आलिंगन अ द य म हा ह र्द ॥ ॥
वि ना ग व न द ह्नि ल व र य क्ष ना २ ग स्य नि रु ग ख र्द ग र्ज नी पा
ह म ॥ ॥ मा न व न द र्प नि खि न वि द्य ह र्द ना २ ना व क्ष मि

ॐ नमो भगवते

शगनगगधविनासमूचया॥ ॐ ॥ ध्रु ॥ **१ वागमः**
॥ नमो वदनयत्नमकटमालं कृणाश्चतुर्भुजस्वर्णपूरकसज
धनधामि॥ ॐ ॥ नमो मिमक्षुपीपमनृणध्वनाश्चयत्रम
सापविप्रविमडधामि॥ ॥ दहिनपीगनपनिवामश्रीमहा
कावाश्चगनमधुसमाश्रयकलिनहिता॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं

ॐ विष्णवे

नयाविश्ववियापिनाश्चक्षुषयवक्रव्याधिइविमरुता॥ ॥
वज्रध्वजपसादिप्रदासरुनयियाश्चतुर्भुजवदनामानसिद्धिवत्र
पसादा॥ ॐ ॥ **१ वागमः** ॥ विश्वयविश्वयविष्णुपवन
संज्ञागजात्रयिवश्रानाशिकमल्लश्चक्षुषयजिनविष्णुमनि
ध्वजयिसूत्रगजिननिनि ~~कावाश्चगनमधुसमाश्रयकलिनहिता~~ सययी॥ ॥

नममकरधार्य काचवर्क रुवर्कसर्वत्र विश्वरूपं शेषयिपद्म
 सीतागर्भसर्वानि सत्त्वसत्त्वहे नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥
 पद्मपङ्कजासक्तक्रीमन् नमस्तुभ्यं नामसंगीतिश्रुत्वा ध्यानं शृङ्ग
 गद्गदस्वनाशनवाधिरुल्लस्यकं गागर्भमभ्यर्च्य नमस्तुभ्यं ॥ ॥
 गुन्नायकदृढधिया उर्ध्वपवनकवियमनिमकगचन्द ३

ॐ
 श्रीसर्पचक्र

माजीधनीयाश्च उवकपागसचिनप । नमश्च नमस्तुभ्यं नमश्च
 नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥
 इधर्मसंघसंबन्धगमियाश्च उवकपागसचिनप । नमश्च नमस्तुभ्यं नमश्च
 नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 १ वागललिन ॥ श्रीसर्पचक्र श्रीमकरकमानाश्च नमश्च नमश्च

नसंकासनदह॥॥ ॐ ॥ दवशीमक्रधार्षी रुवन व्यापिना
 शीघ्रस्वर्गधनदहिनकनध्वनि॥ ॐ ॥ वामपूरकधन
 सूरपुत्रनायाश्चमपकासकाशनदह॥ ॐ ॥ दहिनवाम
 कनधननूधनध्वनिगाश्चवुनमानदह्यवानपहात्र॥ ॐ ॥
 कगननपात्रनाथप्रमदिकदयाश्चरुतिमकसरवरुलवल

प्रसादा॥ ॐ ॥ ॐ०३०॥ गुरु॥ सायासुसम्वत् २२२
 मिथेगुरुयाद्यादतिथिकुरु श्रीवजावार्यचउपासन
 थसकूलिकहिनियाधंवादडा दाश्यागवा याडावियाभुतं
 शागनवावेवि॥ द्रंकावसंजातगुरुकदहृद्विद्वज्जकास्यं गिन
 गं॥ ॐ ॥ ननाद्रं२॥ ॥ वक्रिकुंशुवकंथिभार२२२२

६
 ११२
 कुरु

नयनवस्र ॥ २ ॥ मखल भोयूय पायलर
 यायनरस ॥ ३ ॥ जठमकूठ विम्वक
 २१ कू मूधु ॥ ४ ॥ तथैकलवज वाम्य
 र्वथ २ रलव ॥ ५ ॥ कालि आ विधपय ॥ ६ ॥ रुंदा ॥ जय

गीद्विरुजसम्वर गिरुवनयापिगरमद्वितिविमूया
 तिथि ॥ ७ ॥ ॥

आशा नरदाथ
५४

ASMA ARCHIVES